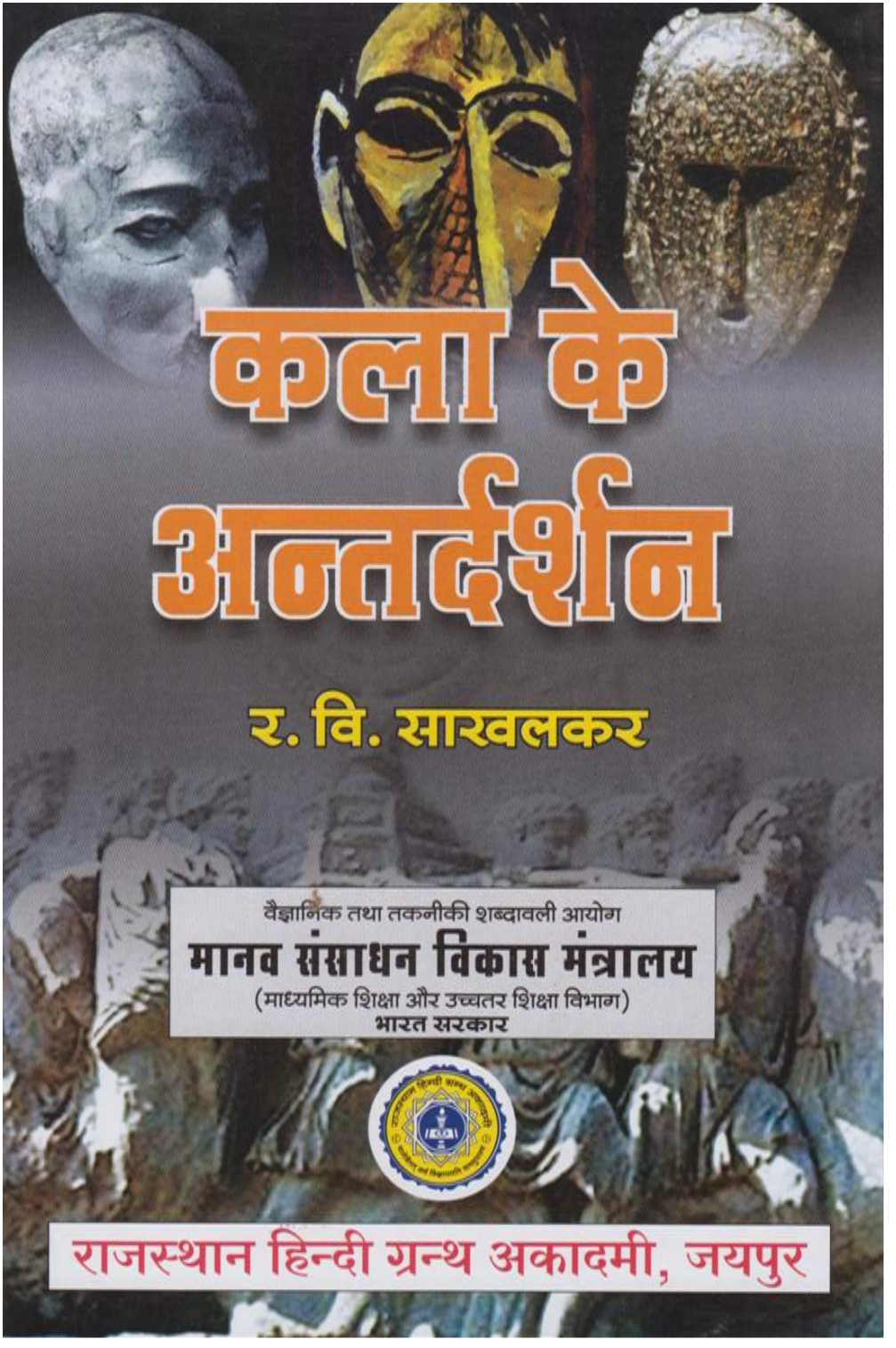

कला के अन्तर्दर्शन

र. वि. साखलकर

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
1.	कला का प्रयोजन	1
2.	रूप (Form) व भावोद्दीपन	10
3.	कला व परंपरा	18
4.	लोककला की अर्थवत्ता	24
5.	कला व आत्मानुभव	37
6.	कला की अपूर्णता व अपरिहार्यता	64
7.	भारतीय सौन्दर्यबोध व समकालीन आधुनिक कला	81
8.	घनवाद से शून्यवाद तक	92
9.	कला में नैसर्गिकतावाद व यथार्थवाद—गुणदोष विवेचन	112
10.	भित्तिचित्रों की विशेषताएँ—ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य	117
11.	आधुनिक कला—रूप व अभिव्यक्ति	124
12.	अतियथार्थवाद व प्राचीन कला	135
13.	कला में अभिव्यंजनावाद	141
14.	प्रभाववाद—एक अनुचिंतन	153
15.	आधुनिक कला व भौतिकवाद	158
16.	वस्तुनिरपेक्ष कला का महत्त्वमापन	167
17.	कलाकृति का मूल्यांकन	185
18.	कला व जीवन-स्वानुभव	202

□